अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 16 जुलाई, 2017)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से कम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) अनास्रवपन को प्राप्त करता है -

(क) संयम से (ख) तप से

(ग) एकाग्रता से (घ) अक्रिया से ( )

(b) एकाग्रता प्राप्त होती है-

(क) योग सत्य से (ख) मनोगुप्ति से

(ग) वचन गुप्ति से (घ) काय गुप्ति से ( )

(c) उदीरणा योग प्रकृतियाँ हैं -

(क) 120 (ख) 122

(ग) 148 (घ) 117 ( )

(d) 8वें गुणस्थान के चौथे भाग में बंध योग्य प्रकृतियाँ हैं -

(क) 59 (ख) 58

(ग) 56 (घ) 26 ( )

(e) 'चमू' का अर्थ है -

(क) सासू (ख) आसूँ

(ग) चोंच (घ) सैना ( )

(f) 'कन्द' का अर्थ है -

(क) भजना (ख) पूजा करना

(ग) पकाना (घ) रोना ( )

(g) दूसरे गुणस्थान में काल करने वाला नहीं जाता है-

(क) नरक गति में (ख) तिर्यंच गति में

(ग) मनुष्य गति में (घ) देव गति में ( )

(h) त्याग पथ अपनाने पर भी भोगों की ओर रुचि होना क्रिया है-

(क)कायिकी (ख) प्रयोग

(ग) प्राद्वेषिकी (घ) समादान ( )

(i) 'कसिणं' का अर्थ है-

(क)अनुक्रम से (ख) सम्पूर्ण

(ग) अंधकार रहित (घ) विशुद्ध ( )

(j) ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है-

(क) सामायिक से (ख)मन गुप्ति से

(ग) काय गुप्ति से (घ) स्वाध्याय से ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) निन्दना से पश्चात्ताप होता है। ( )

(b) योग सत्य में प्रवर्त्तमान जीव यथावादी तथाकारी होता है। ( )

(c) असाता का बंध प्रमादी के ही होता है। ( )

(d) चारित्र के अभाव में चतुर्थ गुणस्थानवर्ती देव भी वंदनीय नहीं होता है। ( )

(e) तीसरा गुणस्थान अपर्याप्त अवस्था में प्राप्त नहीं होता है। ( )

(f) अपर्याप्त अवस्था में काल करने वाला नियमा मिथ्यादृष्टि होता है। ( )

(g) प्रथम तीन शुभ संहनन वाले उपशम श्रेणि नहीं कर सकते हैं। ( )

(h) किसी के द्वारा आचरित पाप को प्रकट कर देना समादान क्रिया है। ( )

(i) अनिष्ट संयोग से होने वाली चिन्ता मानसिक शोक है। ( )

(j) असद् की स्थापना करना अचौर्य है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मुझसे जीव अपुरस्कार को प्राप्त होता है। .....

(b) मैं इस लोक संबंधी और परलोक संबंधी विषयों की अभिलाषा हूँ। .....

(c) मेरा उदर बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त को ही होता है। .....

(d) मैं अर्थ लोलुपी पुरुषों द्वारा अप्रार्थनीय हूँ। .....

(e) मेरा बंध संयम सापेक्ष है और अप्रमत्त अवस्था में ही होता है। .....

(f) मैं तीर्थंकर नाम कर्म के बंध का ऐसा हेतु हूँ जो चतुर्विध संघ को साता उपजाने से होता हूँ। .....

(g) मुझसे जीव संवर को प्राप्त करता है। .....

(h) मैं चारित्र सम्पन्नता से प्राप्त होता हूँ। .....

(i) मैं अज्ञान का क्षय करता हूँ। .....

(j) चौथे से सातवें गुणस्थान में मेरे अलावा अन्य किसी भी प्रकृति की सत्ता समाप्त नहीं होती है। .....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) **परात्मनिंदा प्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोद्भावने च नीचैर्गोत्रस्य। अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(b) **योग दुष्प्रणिधानानादर स्मृत्युपस्थापनानि। अर्थ लिखिए।**

.....

.....

(c) **उपधि प्रत्याख्यान से जीव क्या प्राप्त करता है ?**

.....

.....

(d) **सुलभ बोधिता किससे प्राप्ती होती है ?**

.....

.....

(e) **मान-विजय से क्या प्राप्त होता है ?**

.....

.....

(f) **दाता की क्या-क्या विशेषताएँ हैं ?**

.....

.....

(g) **प्रकृति की सत्ता समाप्त कैसे-कैसे होती हैं ?**

.....

.....

(h) **उदीरणा के लिए अनिवार्य तीन बातें लिखिए।**

.....

.....

(i) **जीव अध्यात्म योग के साधनों से युक्त कैसे होता है ?**

.....

.....

(j) **जीव व्यंजन लब्धि कैसे प्राप्त करता है ?**

.....

.....

(k) **चतुर्थी विभक्ति के कोई दो नियम लिखिए।**

.....

.....

(l) **'पढ' क्रिया के भविष्यकाल के रूप लिखिए।**

.....

.....

(m) **नाचना, बोलना, देखना के क्रिया शब्द लिखिए।**

.....

.....

(n) **एक क्षेत्रावगाढ़ संबंध किसे कहते हैं ?**

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **आलोचना से जीव को क्या लाभ होता है ?**

.....

.....

.....

.....

(b) **क्षमापना से जीव को क्या प्राप्त होता है ?**

.....

.....

.....

.....

(c) **योग निरोध क्रिया को क्रमशः लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(d) **निर्वेद से मोक्ष किस प्रकार प्राप्त करता है ?**

.....

.....

.....

.....

(e) **आठ मदस्थानों को नष्ट किस प्रकार करता है ?**

.....

.....

.....

.....

(f) **मुखवस्त्रिका के कोई दो गुण लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(g) **स्थानक को समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(h) सर्व सावद्य योग से विरत ही वंदनीय-पूजनीय होता है। समझाइए।

.....

.....

.....

.....

(i) गिरि (पर्वत) शब्द के रूप लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(j) पाँचवें गुणस्थान में उदय द्वार में छूटने वाली 17 प्रकृतियाँ के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(k) 9वें गुणस्थान के दूसरे भाग में सत्ता में से छूटने वाली 16 प्रकृतियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(l) सचित्त-संबद्ध-संमिश्राभिषव-दुष्पक्वाहाराः। का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(m) **संवेग से जीव को क्या प्राप्त होता है ?**

.....

.....

.....

.....

(n) **बाह्य कर्मबंध के कारण समान होने पर भी किन कारणों से कर्म बंध में भिन्नता होती है ?**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....